इस न्याययुक्ति में S, P, और M पद है। इन पदों के नाम है- पक्ष पद, साध्य पद तथा मध्यम पद। मध्यम पद वह है जो दोनों आधार वाक्यों में उपस्थित होता है, निष्कर्ष का उद्देश्य (Subject) पक्ष पद होता है और निष्कर्ष का विधेय (Predicate) साध्य पद होता है। इस निरपेक्ष न्याययुक्ति में प्रत्येक पद दो बार आता है। जैसे की ऊपर के उदाहरण में स्पष्ट है।

S — पक्ष पद (Minor Term)

P — साध्य पद (Major Term)

M — मध्यम पद या हेतु (Middle Term)

निरपेक्ष न्याययुक्ति में दो आधार वाक्य होते है, वृहद वाक्य या साध्य वाक्य (Major Premise) और लघु वाक्य या पक्ष वाक्य (Minor Premise)। जिस आधार वाक्य में साध्य पद हो उसे वृहद वाक्य कहा जाता है और जिस आधार में पक्ष पद हो उसे लघु वाक्य कहा जाता है। जैसे—

सभी M P है। — वृहद वाक्य (साध्य वाक्य)

सभी S M है। — लघु वाक्य (पक्ष वाक्य)

अतः सभी S P है — निष्कर्ष

एक मानक आकार वाली निरपेक्ष न्याययुक्ति (Standard form of Categorical Syllogism) में वृहद् वाक्य सबसे पहले आता है, फिर लघु वाक्य आता है, फिर निष्कर्ष सबसे अंत में आता है। परन्तु न्याययुक्ति हमेशा अपने मानक आकार में नहीं होती। ऐसी परिस्थिति में आधार वाक्य और निष्कर्ष को उचित क्रम में लगाकर, उस विशेष न्याययुक्ति की वैधता के विषय में निर्णय किया जा सकता है।

निरपेक्ष न्याययुक्ति की मुख्य विशेषता यह है कि इसके तीनों तर्क-वाक्य (दो आधार वाक्य और निष्कर्ष) निरपेक्ष तर्कवाक्य A, E, I, O होते हैं। जैसे -

सभी मनुष्य मरणशील हैं।
सुकरात एक मनुष्य है।

अतः सुकरात मरणशील है।

कुछ उदाहरण -

(1) सभी वैज्ञानिक दार्शनिक हैं।
सभी गणितज्ञ वैज्ञानिक हैं।

अतः सभी गणितज्ञ दार्शनिक हैं।

पक्ष पद - गणितज्ञ
साध्य पद — दार्शनिक
मध्यम पद — वैज्ञानिक
वृहद् वाक्य — सभी वैज्ञानिक दार्शनिक हैं।
लघु वाक्य — सभी गणितज्ञ वैज्ञानिक हैं।
निष्कर्ष — सभी गणितज्ञ दार्शनिक हैं।

Scanned with CamScanner